ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(9): 197-198
www.allresearchjournal.com
Received: 14-07-2017
Accepted: 17-08-2017

डॉ. राकेश गुप्ता
एसोसियेट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, नेशनल (पी0जी0) कॉलेज, भोगाँव, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. राकेश गुप्ता
एसोसियेट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, नेशनल (पी0जी0) कॉलेज, भोगाँव, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश, भारत

भारतीय समाजवाद और नेहरू

डॉ. राकेश गुप्ता

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2017.v3.i9c.10106

प्रस्तावना

समाजवाद को एक पुराने विचार के साथ एक नये आन्दोलन के रूप में देखा जाता है, एक प्रत्यय के रूप में इसे प्राचीन दार्शनिक, पौराणिक एवं धार्मिक विचारधाराओं में खोजा जा सकता है, किन्तु एक राजनैतिक आन्दोलन के रूप में यह एक आधुनिक व्यक्तिवाद है, जिसका अविर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ। व्यक्तिवाद के विरूद्ध एक दार्शनिक सिद्धान्त के रूप में ''समाजवाद'' पर पहला निबन्ध सन् 1835 ई0 में 'पायरे रेलाक्स' ने लिखा है, तत्पश्चात ''समाजवाद'' शब्द का सम्पूर्ण यूरोप में प्रचलन हो गया। इस शब्द का अर्थ इस सिद्धान्त से लगाया जाने लगा कि समस्त उत्पादन के साधनों, पूँजी, जमीन या अन्य सम्पत्ति पर सम्पूर्ण समाज का स्वामित्व एवं नियंत्रण हो जिसका उपयोग समाज के सभी लोगों के निमित्त एवं उनके हित में हो।[1] सामान्य अर्थ में समाजवाद एक ऐसी मान्यता है, जिसके अन्तर्गत सभी उत्पादकों को समान रूप से सम्मिलित श्रम का फल प्राप्त हो।[2]

समाजवादी विचार के पीछे जो भी दार्शनिक उद्देश्य रहा हो, पश्चिमी देशों में औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप मजदूरों के शोषण में अप्रत्याशित वृद्धि ने आधुनिक काल में इसे एक राजनैतिक विचारधारा एवं आन्दोलन का स्वरूप प्रदान कर दिया। मार्क्स तथा एन्जिल्स के लेखों तथा बौद्धिक कृत्यों ने सम्पूर्ण विश्व में इस विचारधारा तथा आन्दोलन की प्रासंगिकता को सिद्ध किया, उसके बाद रूस की समाजवादी क्रान्ति एवं समाजवादी व्यवस्था में समकालीन व्यक्तियों एवं भावी संततियों को इस व्यवस्था के प्रति स्वाभाविक रूप से प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू बीसवीं शताब्दी के उत्कृष्ट बुद्धिजीवी तथा महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने भारतीय राजनीति को दीर्घकाल तक नेतृत्व प्रदान किया। नेहरू जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा राजनीतिक प्रवृत्तियों के प्रति सदैव जागरूक थे। समाजवादी विचारों के समर्थक कतिपय अंग्रेजी लेखकों तथा विचारकों के सम्पर्क में नेहरू जी ने इस नई विचारधारा के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न की।

1958 में समाजवाद पर विचार प्रकट करते हुए नेहरू जी ने स्पष्ट किया था कि मैं उस प्रकार का उग्र समाजवाद नहीं चाहता जिसमें राज्य सर्वशक्ति सम्पन्न होता है और प्रायः सभी कार्यकलापों का संचालन करता है। राजनैतिक रूप से राज्य बहुत शक्ति सम्पन्न होता है। अतः मैं आर्थिक शक्ति के विकेन्द्रियकरण की योजना के आदर्श रूप को भारतीय जनजीवन के लिये व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करना चाहता हूँ।

बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक से अन्तिम वर्षों में नेहरू को रूस भ्रमण करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिससे उन्होनें इस नई व्यवस्था तथा नई सभ्यता को नजदीक से देखा। फलस्वरूप समाजवाद के सिद्धान्त के सार तत्व तथा तर्क को उन्होंने स्वीकार किया, परन्तु इसके फलस्वरूप क्रियान्वयन के सम्बन्ध में वे अपने राजनैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तन के पक्षधर थे। पण्डित नेहरू के शब्दों में[3] ''समाजवाद'' एक अस्पष्ट शब्द हो गया है जिसके कई अर्थ हैं। आधुनिक युग की गतिशीलता तथा द्रुतगामी औद्योगिक प्रगति के कारण समाजवाद की अवधारणा में परिवर्तन की आवश्यकता है, परन्तु इसके मौलिक सिद्धान्त अपनी जगह सही हैं। पण्डित नेहरू अपने देश में जिस प्रकार का समाजवाद लाना चाहते थे उस पर उनके व्यक्तित्व तथा मूल्यों की छाप सुस्पष्ट है, यहाँ पर सर्वप्रथम उन परिस्थतियों एवं कारकों पर विचार विमर्श किया गया है जिन्होंने नेहरू को समाजवाद की ओर उन्मुख किया, नेहरू का समाजवाद उनकी भावुकता, मानवीयता, आदर्शवाद, यथार्थवाद एवं विवेकशीलता से ओतप्रोत है।

सन् 1927 में पण्डित नेहरू से रूस की यात्रा की। उसी समय रूस ने राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक योजना प्रारम्भ की थी।

रूस के क्रान्तिकारी परिवर्तन को देखकर समाजवाद के प्रति उनमें इतना प्रबल अनुराग बढ़ा कि वे भारत लौटे तो उन्हें अपरिपक्व होने की गाँधीजी की फटकार सुननी पड़ी। फिर भी नेहरू जी के प्रयत्नों से सन् 1929 में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने इस बात पर बल देते हुए एक प्रस्ताव पारित किया कि भारत के लोगों की गरीबी और दुख को दूर करने के लिए जनसाधारण की स्थिति में सुधार लाने के लिए तत्कालीन सामाजिक संरचना में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना तथा सामाजिक असमानताओं को दूर करना आवश्यक है।[4] दिसम्बर 1929 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए नेहरू ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की – मैं तो स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ कि मैं एक समाजवादी एवं गणतांत्रिक हूँ। मैं राजाओं, महाराजाओं में विश्वास नहीं करता।[5] इसके बाद सन् 1936 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में उन्होंने पुनः घोषणा की – अपने अंधकारपूर्ण युग के लिये मैं उस महान तथा लुभावनी नई व्यवस्था को सर्वाधिक उन्नतिशील मानता हूँ। यदि भविष्य आशापूर्ण दिखाई देता है, तो वह विशेषकर रूस तथा उसके कृत्यों के कारण ही है। मेरा विश्वास है कि यदि विश्व कोई बाधा न उपस्थित करे तो यह नई सभ्यता दूसरे क्षेत्रों में भी फैलेगी और पूंजीवाद के पोषक युद्धों एवं संघर्षों को समाप्त कर देगी।[6]

इस प्रकार नेहरू जी के सद्प्रयत्नों से स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण के समय राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में समाजवादी तत्व भी जोड़े गये। संविधान के अनुच्छेद–38 में सुस्पष्ट प्राविधान है कि :–

1. राज्य एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करे तथा उसे प्रभावी रूप से सुरक्षित रखे, जिसमें आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक न्याय, राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को उपलब्ध हो।
2. राज्य लोगों की आमदनी की असमानताओं को कम करने का प्रयास करे।

अनुच्छेद–39 में यह प्राविधान जोड़ा गया कि राज्य विशेषतः अपनी नीति के माध्यम से ऐसी व्यवस्था करेगा जिसमें –

1. पुरूष अथवा स्त्री सभी नागरिकों को जीविका के पर्याप्त साधनों का अधिकार उपलब्ध हो।
2. समाज के भौतिक साधनों, स्वामित्व एवं नियंत्रण का बँटवारा ऐसा हो जिसमें सर्वाधिक सामान्य हित संवर्धन हों।
3. आर्थिक व्यवस्था का संचालन इस प्रकार हो कि धन तथा आर्थिक साधनों का केन्द्रीयकरण सामान्य हित के विरूद्ध न हो।

भारतीय स्वतंत्रता के बाद प्रधानमंत्री के रूप नेहरू ने समाजवाद को बढ़ावा देने के लिए कई कार्य किये। जैसे जमींदारी उन्मूलन, बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण, व्यापक औद्योगीकरण की प्रक्रिया का क्रियान्वयन, सहकारी आन्दोलन को बढ़ावा इत्यादि निश्चित ही समाजवाद की स्थापना के प्रारम्भिक चरण कहे जा सकते हैं। इस प्रकार पण्डित नेहरू के समाजवाद की अपनी अलग ही विशेषताएं थी। ये किसी अन्य देश के समाजवाद की नकल नहीं थी। उन्होंने समाजवाद की मौलिक अवधारणा से सारतत्व अवश्य ग्रहण किया था, परन्तु भारत के लिए वे उसे अपने ढंग का स्वरूप प्रदान करना चाहते थे। मार्क्स की तरह नेहरू के समाजवाद का लक्ष्य सर्वहारा वर्ग की स्थापना नहीं था। प्लेटो की तरह अति निर्धनता की स्थिति भी वे समाज को नहीं देना चाहते थे। एक आधुनिक सामान्य समाजवादी की तरह नेहरू भी सदैव राष्ट्र की सम्पन्नता में विश्वास रखते थे। उनका मानना था ''समाजवाद का अभिप्राय छीनना नहीं, अपितु प्रदान करना है।''

इस प्रकार नेहरू के समाजवाद का लक्ष्य उपलब्धिमूलक समाज की स्थापना करना था, परन्तु वे इसके प्रति सतर्क थे कि ऐसा उपलब्धिमूलक समाज प्राप्तिमूलक समाज में परिणत न हो जाय क्योंकि उनकी मान्यता थी कि व्यक्ति की निरंकुशतामूलक प्रवृत्ति की चरम परिणति समाज में असमानता, हिंसा, भिन्नता तथा निर्धनता पूर्ण जन्म देती है। इस प्रकार नेहरू के समाजवादी समाज की रूपरेखा मार्क्स से भिन्न थी। नेहरू के समाजवाद में वस्तुतः समतावादी व्यवस्था की परिकल्पना है, जिसके अन्तर्गत गरीब से गरीब व्यक्ति को भी भरपेट भोजन एवं पर्याप्त वस्त्र तथा आवास प्राप्त हो सके।

नेहरू जी समाज में समाजवादी अवधारणा के द्वारा आर्थिक समानता तथा न्याय की अवधारणा स्थापित करना चाहते थे उन्होंने विज्ञान व तकनीक के महत्व को भी नहीं नकारा। उनका मानना था कि कोई भी देश भूख, गरीबी, निरक्षरता, अविश्वास और जानलेवा रीतिरिवाज, संसाधनों की बर्बादी की समस्या को विज्ञान एवं तकनीकी के बिना नहीं समाप्त कर सकता।

समाजवाद, वर्ग उत्पीड़न के बिना उत्पादन का संगठन करके, राज्य के सभी सदस्यों के कल्याण को सुनिश्चित बनाकर आबादी की सहअनुभूतियों को पूर्ण विस्तार प्रदान करता है और इस प्रकार वर्गों के पारस्परिक मेलजोल तथा सात्मीकरण को बढ़ावा देता है तथा उसे प्रबल त्वरण प्रदान करता है।

संदर्भ

1. डेविड एल0 सिल्स, सं0 इन्टरनेशनल इन्साइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइन्स (मैक मिलन 1968)
2. फिलिप पी0 वीनर, डिक्शनरी ऑफ द हिस्ट्री ऑफ आइडिया : स्टडी ऑफ सलेक्टेड आइडिया।
3. सर्वपल्ली गोपाल, सं0 जवाहरलाल नेहरू ऐन्थोलाजी।
4. एम0जे0 अकबर, नेहरू : द मेकिंग ऑफ इण्डिया।
5. एम0जे0 अकबर, नेहरू : द मेकिंग ऑफ इण्डिया।
6. एम0जे0 अकबर, नेहरू : द मेकिंग ऑफ इण्डिया।